बी० ए० I
समाज शास्त्र

PAGE NO.
DATE 01-02-2022

हिन्दु विवाह के स्वरूप —

विवाह के स्वरूप से हमारा तात्पर्य विवाह बन्धन में विभिन्न विधियों से है। मनुस्मृति बताये गये हिन्दु विवाह प्रमुख आठ स्वरूप इस प्रकार हैं-

① **ब्रह्म विवाह** — यह विवाह सभी प्रकार के विवाहों में श्रेष्ठ माना गया है। मनु ने ब्रह्म विवाह को परिभाषित करते हुए लिखा है। "वेदों के ज्ञाता शील-वान वर को स्वयं बुलाकर वस्त्र एवं आभूषण आदि से सुसज्जित कर धार्मिक विधि से कन्या दान करना ही ब्रह्मविवाह है।

दैव विवाह - वेदों में दक्षिणा देने के रूप यज्ञ करने वाले पुरोहित को अलंकार से सुसज्जित कन्यादान ही 'देव विवाह' है प्राचीनकाल में यज्ञ और धार्मिक अनुष्ठानों का अधिक महत्व था जो ऋषि या यजमान इन पवित्र धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करता यजमान उससे अपनी कन्या का विवाह कर देता है।

आर्ष विवाह — इस विवाह में इच्छुक वर कन्या के पिता को एक गाय एक बैल अथवा दोनों जोड़े प्रदान करके विवाह करता है। याज्ञवल्क्य लिखते हैं - दो गाय लेकर जब कन्या दान किया जाय तब उसे आर्ष विवाह कहते हैं।

PAGE NO.
DATE: / /

प्रजापत्य विवाह - प्रजापत्य विवाह भी ब्रह्म विवाह के समान होता है इसमें लड़की का पिता आदेश देते हुए कहता है "तुम दोनों एक साथ रहकर आजीवन धर्म का आचरण करो।

असुर विवाह - कन्या के परिवार वालों एवं कन्या को अपनी शक्ति के अनुसार धन देकर इच्छा से कन्या को ग्रहण करना असुर विवाह कहा जाता है। गौतम का मत है कि अधिक धन देकर कन्या को ग्रहण करना असुर विवाह कहलाता है।

गान्धर्व विवाह - मनु कहते हैं कन्या और वर की इच्छा से पारस्परिक स्नेह द्वारा काम और मैथुन युक्त भावों से जो विवाह कहा जाता है। उसे गान्धर्व विवाह कहा जाता है"

राक्षस विवाह - मनु के अनुसार - मारकर अंग छेदन करके घर को तोड़कर चिल्लाती काटी हुई रोती हुई कन्या को बलात हरण करके लाना।

पैशाच विवाह - मनु के अनुसार - सोयी हुई उन्मत्त घबराई हुई मदिरा पान की हुई अथवा राह में जाती हुई लड़की के साथ बलपूर्वक कुकृत्य करने के बाद उससे विवाह करना पैशाच विवाह है" इस प्रकार के विवाह को सबसे निम्न कोटि का माना गया है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया